



AglaSem School

Sample Papers for Class 11

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र-D

खण्ड 'क'

1. (क) शीर्षक-हिन्दी की बढ़ती लोकप्रियता।

(ख) (i) सिनेमा जगत में कलाकारों को हिन्दी के माध्यम से एक पहचान मिली है।

(ii) हिन्दी में फिल्म बनाने से कलाकारों की पूँजी एवं प्रतिष्ठा बढ़ी है।

(ग) 'छोटा परदा' से तात्पर्य टी.वी. चैनलों पर प्रसारित अनेक सीरियल हैं जो आज जनजीवन को अपनी ओर आकर्षित करके घर-घर में लोकप्रिय हो गये हैं

(घ) 'सड़कों का कोलाहल' सन्नाटे में बदल गया है, का आशय यह है कि जब सीरियल टी.वी. चैनल पर दिखाए जाते हैं तो लोग उन्हें देखने के लिए घरों में टी.वी. के सामने ही रहते हैं। अतः सड़कों पर शोरगुल नहीं होता।

(ङ) लोकप्रिय धारावाहिकों, जैसे—रामायण, महाभारत, सास-बहू कौन बनेगा करोड़पति के माध्यम से लेखक सिद्ध करना चाहता है कि लोगों में पौराणिक रीति-रिवाजों के प्रति तथा हिन्दी के प्रति जागरूकता बढ़ रही है।

(च) 'सदी का महानायक' से लेखक अभिताभ बच्चन की ओर संकेत कर रहा है।

(छ) फिल्म और टी.वी. ने हिन्दी को हर दिल की धड़कन की भाषा बना दिया है तथा गैर हिन्दी क्षेत्रों के कलाकारों की हिन्दी गीतों के माध्यम से पहचान बनाई है।

(ज) **वाक्य प्रयोग**—रासायनिक उर्वरक के खाद्यान्नों की उर्वरता बढ़ा दी है।

(झ) सन्नाटा-कोलाहल विलोम-अनुलोम, पर्याय।

(ञ) उच्चारण—'उत्' उपसर्ग भारतीय—'ईय' प्रत्यय।

2. काव्यांश

(क) मेघों के झुकने का धरती पर यह प्रभाव पड़ता है कि बादलों को देखकर धरती का तन-मन ललक उठता है और बादल धरती को हरा-भरा कर प्रसन्न कर देते हैं, क्योंकि मेघ जल से युक्त होते हैं।

(ख) राधा श्रीकृष्ण की मित्र और ब्रज क्षेत्र के बरसाने में रहने वाली ग्वालिन थी जो श्रीकृष्ण से प्रेम करती थी।

राधा (उसे) को 'बेसुध' इसलिए कहा है, क्योंकि जब उसके कानों में श्रीकृष्ण की बाँसुरी का स्वर पहुँचता था, तब उसकी धुन को सुनकर मदमस्त होकर श्रीकृष्ण की ओर दौड़ी चली जाती थी। राधा के समान गोकुल क्षेत्र में निवास करने वाली अन्य गोपियाँ भी बेसुध होकर दौड़ पड़ती थीं।

(ग) मन के भावों और प्रेम गीतों का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। जब मन में जो भाव उमड़ते हैं, उन्हीं के स्वरूप प्रणय श्लोक (गीत) उमड़ते हैं। इनमें मन के भाव और उनमें उत्पन्न होने वाले गीत एक-दूसरे पर आश्रित हैं। मन के भावों के अनुरूप ही गीत उमड़ते हैं। अतः मन के भाव और गीत दोनों एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं।

(घ) काव्यांश में झरनों के अनायास फूट पड़ने का यह कारण बताया गया है कि जब पत्थरों में प्यास जगती है तब झरनों में से जल का स्रोत पृथ्वी के वासियों के कल्याणार्थ फूट पड़ता है। अर्थात् जब पत्थरों के अन्दर जल के स्रोत की धारा तीव्र रूप से उत्पन्न होती है। उनकी मात्रा बढ़ जाने पर वह झरना फूट पड़ता है।

(ङ) **आशय स्पष्टीकरण**—प्रस्तुत काव्यांश के आधार पर कवि बादलों के पृथ्वी पर झुकने के प्रभाव का वर्णन करते हुए कह रहा है—बादलों के आगमन का प्रभाव वर्षा ऋतु में खेतों पर दिखायी देता है। खेत जल के प्रभाव से युक्त होकर युवा रूप में लहराते हुए दिखाई देते हैं। जिस तरह ग्रामीण स्त्रियाँ अपने प्रेमी के निकट रहने पर सौन्दर्य से।

खण्ड 'ख'

3. मोबाइल फोन की अपरिहार्यता

कहते हैं आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है। जब-जब मनुष्य को आवश्यकता महसूस हुई तब-तब आविष्कार हुए हैं। जब मनुष्य आदिम था अर्थात् अपने विकास के प्रथम चरण में था, उसने पत्थर को रगड़कर आग का आविष्कार किया। पत्थरों के औजार और तन सजाने तथा सरदी-गरमी से बचने के लिए उसने रंग-बिरंगे परिधान का आविष्कार किया। इस प्रकार नित नए आविष्कार होते रहे, युग बदलते रहे। वास्तव में मनुष्य को जब जिस वस्तु की आवश्यकता पड़ी उसने उसे पाने के असंभव प्रयास किए और आज भी यह प्रयास निरन्तर जारी हैं। कम्प्यूटर, टी.वी., रेडियो, टेलीविजन, मोबाइल, फोन इत्यादि भौतिक वस्तुएँ इसके परिचायक हैं। आज से कुछ वर्ष पहले हमने कभी कल्पना भी की थी कि हम फोन हाथ में लेकर घूमेंगे? हमारी टेक्नोलौजी इतनी तेजी से आगे बढ़ रही है कि पलक झपकते ही विज्ञान का एक नया तथा अद्भुत वरदान हमारे सामने होता है।

मोबाइल फोन ऐसा ही एक वरदान है, जो 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' है। आज हर व्यक्ति के हाथ में इसे देखा जा सकता है। हो भी क्यों न, यह ही है इतना लाभदायक आज मोबाइल एक मित्र की भाँति हमारे साथ रहता है और कभी भी अकेलापन महसूस नहीं होने देता। हर व्यक्ति इससे जुड़ा है। मोबाइल फोन के कई लाभ हैं; जैसे—कभी गाड़ी खराब हो गई, कहीं पर देर हो या कोई ऐसी घटना हो गयी जिसकी आप किसी को सूचना देना चाहते हों या सहायता लेना चाहते हैं तो झट से यह मोबाइल फोन आपकी समस्या को हल कर देगा। केवल बात करने की ही नहीं, यह फोन अनेक अन्य सुविधाएँ भी देता है। तरह-तरह के खेल, कैलकुलेटर, फोन बुक की सुविधा, समाचार, चुटकुले, चटपटी बातें, ये तो आम सुविधाएँ हैं और आप यदि कहीं काम में लगे हैं तो आपके लिए संदेश आपका मोबाइल स्वयं ले लेगा।

एक नई और महत्वपूर्ण सुविधा जो मोबाइल पर लागू की जा रही है, वह है एस.एम.एस. के माध्यम से विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेना और अब तो प्रतियोगिताओं के भाग्य का फैसला भी जनता के हाथ में है। जितना गुड़ डालिए, उतना मीठा होगा—चाहिए तो कैमरा लीजिए, ई-मेल की सुविधा प्राप्त कीजिए और भी न जाने क्या-क्या।

प्रश्न यह उठता है कि अगर यह इतना लाभकारी है, तो फिर विद्यालय में अध्यापक इसके प्रयोग पर नाराज क्यों होते हैं? इस पर रोक क्यों लगाते हैं? यहाँ दोष मोबाइल का नहीं, इसका प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों का है; जो बिना सोचे-समझे इसका दुरुपयोग करने लगते हैं और तब यह लाभ देने के स्थान पर हानिकारक हो जाता है।

मोबाइल फोन का सबसे बड़ा दोष तो यह है कि यह समय-असमय यहाँ-वहाँ बजता ही रहता है। लोग सुरक्षा भूल जाते हैं। गाड़ी चलाते समय फोन पर बात करना असुरक्षित ही नहीं, कानूनन अपराध भी है।

हर चीज एक सीमा में हो तो अच्छा है, क्योंकि तभी उसका लाभ और महत्व समझ में आता है अगर मोबाइल फोन की सुविधा मिली है तो हमें उनका सदुपयोग करना चाहिए। यदि उपयोग भली-भाँति सबके हित में कर सकें तो यह अन्य आविष्कारों की तरह हमारे लिए उपयोगी सिद्ध होगा अन्यथा इसे अभिशाप में बदलते देर नहीं लगेगी।

4. सेवा में,

चैयरमैन, रेलवे बोर्ड

रेल भवन, नई दिल्ली।

महोदय,

मुझे प्रसन्नता है कि आपने देश के महानगरों में 'केवल महिलाओं के लिए' आरक्षित लोकल ट्रेन चलाकर बड़ा पुनीत कार्य किया है। अत्यन्त सराहनीय है। वास्तव में आप धन्यवाद के पात्र हैं। महिलाएँ अब सुरक्षापूर्ण यात्रा करके सुख एवं आनन्द का अनुभव करेंगी तथा आपकी ऋणी रहेंगी। अनारक्षित ट्रेनों में यात्रा करते समय उन्हें लूट-पाट व बलात्कार का भय सताता रहता था, अतः उन्हें इस समस्या से निजात मिल जाएगी। ऐसा मेरा विश्वास है।

सधन्यवाद।

भवदीय

क, ख, ग

लाजपत नगर, नई दिल्ली

दिनांक :

अथवा

सेवा में

सम्पादक

नवभारत टाइम्स

नई दिल्ली

महोदय,

आज जनता मैंहगाई से त्रस्त है। सब्जी-फल विक्रेताओं ने तो अधिक दाम के साथ नकली बाटों के द्वारा कम तोलकर ग्राहकों को धोखा देना भी शुरू कर दिया है। बाँट तथा नाप-तौल अधिकारी उदासीन हैं या उनकी मिली-भगत है।

कृपया इस परेशानी को अपने लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से सम्बन्धित अधिकारियों को अवगत करायें तथा दोषी लोगों पर कठोर

कार्यवाही की कृपा करें। आशा है आप इस समस्या को दूर करने में अवश्य सहायता करेंगे।

सधन्यवाद।

भवदीय

क्षेत्रीय नागरिक

कमल नगर, आगरा।

दिनांक :

5. (i) **प्रिन्ट माध्यम**—पत्र-पत्रिकाएँ या प्रिन्ट माध्यम जनसंचार की सबसे मजबूत कड़ी हैं। आरम्भ में केवल प्रिन्ट के जरिये खबरों के आदान-प्रदान को ही पत्रकारिता कहा जाता है। अब प्रिन्ट, रेडियो, टेलीविजन या इण्टरनेट किसी भी माध्यम से संचार को पत्रकारिता कहा जाता है।

(ii) टेलीविजन सबसे प्रभावशाली एवं सशक्त माध्यम है। किसी भी खबर को पुष्ट करने के लिए इससे सम्बन्धित बाइट जाती है। अतः टेलीविजन पत्रकारिता में बाइट का काफी महत्व है।

(iii) इण्टरनेट एक ऐसा माध्यम है जिसमें सभी संचार माध्यम मीडिया, रेडियो, टेलीविजन, किताब, सिनेमा आदि का रूप या समागम है।

(iv) फ्रीलांसर पत्रकार उसे कहते हैं जो किसी पत्र से सम्बन्धित होता है। वह किसी भी पत्र के लिए लिखता है और पारिश्रमिक प्राप्त करता है।

(v) **रेडियो नाटक**—यह रेडियो प्रसारण के लिए ध्वनि प्रधान रचना होती है। इसे 'रेडियो रूपक' भी कहते हैं। विष्णु प्रभाकर, सत्येन्द्र शरद, अमृतलाल नागर, उपेन्द्र नाथ उदयशंकर भट्ट, सुमित्रानन्दन पन्त आदि प्रमुख रेडियो नाटककार हैं।

6. फीचर—महानगरों में बढ़ते अपराध

अच्छे भविष्य की कामना हर व्यक्ति करता है। उसके लिए शहर नगर-नगर न जोन कहाँ-कहाँ की खाक छाननी पड़ती है। गाँव से महानगरों की ओर पलायन, जहाँ उन्हें मिलता है तो केवल असंतोष और दिखाई देता है आखिरी रास्ता वो रास्ता जो केवल अन्दर की ओर खुलता है—अपराध की दुनिया का रास्ता। चोरी, बलात्कार, नशीले पदार्थों की तस्करी, भू-माफिया इत्यादि कार्यों में लिप्त नवयुवक रास्ता भटकने पर ही इन रास्तों पर चलते हैं जिसके कारण महानगरों से सुरक्षा एवं व्यवस्था समाप्त हो गयी। बेरोजगार युवाओं को इन आपराधिक गतिविधियों में शामिल होने का कारण हमारा तंत्र ही है। कानून-व्यवस्था तो छोड़ो जंगलराज बन गया है महानगरों में। न जाने कहाँ कब कोई बम फट जाए और जिन्दगी की शाम हो जाये। गुलाबी नगरी जयपुर में इतने निर्दोष लोगों की जान चली गयी। दिल्ली में चलती गाड़ी में सामूहिक बलात्कार आदि दिल दहला देती हैं। सरकार को चाहिए कि वह इस दिशा में कुछ ठोस कदम उठाए और महानगरों में कानून-व्यवस्था सुधारें ताकि नागरिकों को राहत की साँस मिले और स्वतंत्र भारत में स्वतंत्रतापूर्वक रह सकें।

अथवा

प्रतिवेदन

भारत विकास परिषद् की आगरा शाखा ने 21 जुलाई से 25 अगस्त तक संस्कृति मास मनाया। इसके अन्तर्गत स्कूली बालकों और नागरिकों की कई प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयी। प्रमुख रूप से

भाषण, कथा-कथन, सूक्ति-लेखन, रागिनी-संगीत, राष्ट्रीय समूहगान, वंदे मातरम् गायन, पुष्प-सज्जा, चित्रकला, कालेज, ललित परिधान प्रतियोगिताएँ सम्पन्न हुई।

इन प्रतियोगिताओं में 300 विद्यालयों के 4000 बच्चों ने भाग लिया। पहले ये प्रतियोगिताएँ शाखा-अनुसार की गयी। आगरा में परिषद् की 20 शाखाएँ हैं। फिर खण्ड के अनुसार प्रतियोगिताएँ हुई। ये सभी आयोजन बड़े कुशल, व्यवस्थित तथा सादगीपूर्ण हुए।

भारत विकास परिषद्, आगरा के प्रधान श्री विनोद कुमार गुप्ता ने बताया कि इस वर्ष से 'वंदे मातरम्' प्रतियोगिता का आयोजन अखिल भारतीय स्तर पर होना आरम्भ हुआ है। इसमें आगरा के 1500 बच्चों ने भाग लिया इस प्रकार एक विस्तृत समाज में 'वंदे मातरम्' गीत का प्रसार हुआ।

राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता में काँटे की टक्कर हुई। इसमें 200 विद्यालयों के 1600 छात्रों ने भाग लिया। इन आयोजनों में हजारों कार्यकर्ताओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

अथवा

सड़कों पर दिन प्रति दिन बढ़ती दुर्घटनाएँ (आलेख)

कहने को तो हमारे शहर को राज्य के सबसे सुन्दर एवं महत्वपूर्ण शहरों में गिना जाता है, क्योंकि हमारे शहर में विश्व प्रसिद्ध इमारत ताजमहल है। हमारे शहर के विकास के लिए सरकार विशेष ध्यान रखते हुए सहायता देती है परन्तु खेद है कि हमारे नगर की लगभग 80% सड़कें टूटी हुई हैं। कहीं-कहीं तो ऐसे गड्ढे हैं कि कारें, मोटरसाइकिल अचानक उछल जाती हैं और लोग अचानक दुर्घटनाग्रस्त हो जाते हैं। उम्र दराज लोगों को तो हर समय भय ही लगा रहता है। दूसरी ओर शहर में ट्रैफिक की अधिकता के कारण एवं ट्रैफिक पुलिस की कमी एवं रिश्वतखोरी के कारण आए दिन सड़कों पर दुर्घटना बढ़ती ही जा रही हैं। स्कूटर, मोटरसाइकिलों तो प्रतिदिन भारी मात्रा में दुर्घटनाग्रस्त होती रहती हैं। पता नहीं कितने बेचारे ऊपर चले गये या अपना इलाज करवा रहे हैं। वारिस के दिनों में तो शहर की सड़कों का बहुत बुरा हाल हो जाता है और तब तो हादसों की संख्या संख्या चौगुनी हो जाती है पता ही नहीं लगता कि पानी कितना भरा है गड्ढे की गहराई कितनी है नगर निगम दिखावे के लिए प्रतिवर्ष इन्हें ठीक कराती है परन्तु कुछ समय बाद ज्यों की त्यों हालत हो जाती है। सड़कें भी हर वर्ष बनती हैं परन्तु तेज बारिश के कारण एक ही बार में नामोनिशान खो जाता है, क्योंकि पानी के निकासी को उचित व्यवस्था, नालियाँ, नाले नहीं बनाये जाते एवं उनकी समुचित सफाई नहीं होती, जलभराव भी दुर्घटना का एक कारण है। नगर के चौराहे व्यस्ततम होते जा रहे हैं। किसी भी चौराहे पर ट्रैफिक लाइट एवं गोलचक्कर नहीं तथा कभी-कभी ट्रैफिक पुलिस भी नजर नहीं आती है जिससे दुर्घटनाएँ दिन पर दिन बढ़ती जा रही हैं। मेरा सुझाव है कि इस प्रकार की दुर्घटनाओं को रोकने के लिए कठोर ट्रैफिक नियम बनाये जाये एवं चौराहों की रिश्वतखोरी, अतिक्रमण में सुधार हो। अतिक्रमणों के कारण वाहन समुचित रूप से मुड़ नहीं पाते तथा समय-समय पर यातायात के नियमों का प्रसारण होना आवश्यक है तथा जनता को जागरूक किया जाना भी इन दुर्घटनाओं को रोकने में रामबाण का कार्य कर सकता है।

खण्ड 'ग'

7. (क) (i) सावन के माध्यम से अपनी भावना को प्रकट करना पुरानी परम्परा है अतः कवि प्रयोग मनोहारी है।

(ii) कवि चाहता है कि उसके पिता को उसकी याद न आए। पिता, पुत्र के वियोग में न तड़पे।

(iii) कवि भवानी जेल में रहते हुए बहुत व्यथित और उदास हैं। परन्तु घर वालों को उनकी परेशानी से कोई दुःख न हों इसलिए ऊपरी मन से कहता है कि मैं मजे में हूँ।

(iv) भवानी को जेल में रहकर सबसे बड़ा कष्ट है—घर-परिवार का वियोग। वह पारिवारिक स्नेह के अभाव में बहुत दुःखी हैं।

(ख) (i) कवि उस आँख अर्थात् निगाह को खतरनाक मानता है जो हर प्रकार के परिवर्तन को देखते हुए भी स्वयं जड़ रहती है। वह न तो दुनिया से प्रेम करती है, न ही अंध विश्वासों की जड़ता से परहेज करती है बल्कि रोजमर्रा की लक्ष्यहीन जिन्दगी को ही सर्वस्व मान बैठी है।

(ii) कुछ लोग आँख अर्थात् निगाह होते हुए भी अंधविश्वास कट्टरता, परम्परागत रूढ़ियों पर मर-मिटते हैं, वे उन्हीं के पालन में अपने जीवन को नष्ट कर देते हैं

(iii) लक्ष्यहीन जीवनचर्या को ढोते रहना जड़ता और ठहराव के प्रतीक हैं। कवि इसके द्वारा मुर्दा शान्ति पर प्रहार करना चाहता है।

(iv) कवि चाहता है कि जड़ शान्ति की बातें करने वाले धार्मिक नेता-पंडित-पुजारी लोगों की आँखों में चुभें और वे उनका बहिष्कार करें।

8. भाव सौन्दर्य—इसमें समाज के अभावों और उनके प्रति लापरवाह और निष्क्रिय समाज को जगाने का प्रयत्न सराहनीय है। शोषित वर्ग को अपनी आवाज बुलन्द करनी होगी, शायरों का दायित्व बढ़ गया है शासन व्यवस्था व सत्ताधारियों के साथ जनता को भी अपने में सुधार लाना जरूरी है।

शिल्प सौन्दर्य—भाषा में सरलता, सरसता व प्रवाहमयता है। उर्दू के शब्दों की बहुलता है। ओज गुण की प्रधानता है। 'पत्थर-पिघल', 'आवाज में असर', 'गैर की गलियों' में अनुप्रास अलंकार की छटा है। गुलमोहर का प्रतीकात्मक प्रयोग दर्शनीय है। गजल छन्द का प्रयोग हुआ है।

अथवा

भाव सौन्दर्य—स्वतंत्रता से पूर्व के भारतीय की दयनीय दशा का चित्रण किया गया है। थोड़े से ऋण के बदले हरी-भरी खेती जिसे तिनके-तिनके को देखकर किसान उल्लासित हो जाता था, उसे सूदखोर सेठों ने हथिया लिया है और किसान के जीवन की प्रसन्नता नष्ट हो गयी है।

शिल्प सौन्दर्य—'लहराते वे खेत' में लहराते खेतों तथा कारकुनों द्वारा लाठी से मारे जाने का बिम्ब सजीव बन पड़ा है। भाषा सरल एवं प्रभावी है। जीवन की हरियाली में रूपक तथा तृन-तृन में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

9. (क) इस पंक्ति में अपने कुटुम्बीजनों पर व्यंग्य है कि उसकी भक्ति भावना में पाप अनुभव करते हैं राणा ने उन्हें जान से मारने के लिए विष का प्याला भेजा परन्तु मीरा ने कृष्ण का नाम लेकर स्वीकार किया। मीरा ने अपमान को भी सहा परन्तु भक्ति पथ से नहीं डिगी।

(ख) दूसरे वचन में ईश्वर से यह कांक्षा व्यक्त है कि उसका सारा सांसारिक सुख नष्ट हो जाए। उसे भीख माँगनी पड़े। इस प्रकार उसका अन्धकार नष्ट हो और वह प्रभु के चरणों में समर्पित हो सके। समर्पण के लिए अहं का गलना आवश्यक है।

(ग) 'माटी का रंग' के माध्यम से झारखण्ड के लोक जीवन की स्वाभाविक विशेषताओं को उजागर करना चाहती है। वहाँ की स्वाभाविक झारखण्डी भाषा, जुझारूपन, अक्खड़ता, नाच-गान, हँसी-रुदन, स्वच्छ प्राकृतिक वातावरण, धनुष-बाण, कुल्हाड़ी आदि माटी के रंग को व्यक्त करती हैं।

(घ) कवि ने चंपा के भोलेपन, शरारती स्वभाव, स्पष्टवादिता परिवार प्रेमी, अत्याचार के प्रति विद्रोही भावना वाली एवं सीधी-सादगी बालिका की विशेषताएँ बताई हैं।

10. (क) लॉर्ड कर्जन की कूटनीतिपूर्ण बंग-भंग की योजना मनमाने ढंग से लागू करने के प्रयास के विरुद्ध भारतवासी उठ खड़े हुए और कर्जन की जड़े हिल गई और भी मतभेदों से कर्जन को इस्तीफा देना पड़ा जो स्वीकार किया गया। विदाई के समय जब वे मुम्बई आए तो जनता ने उसे आड़े हाथों लिया क्योंकि वे समय-समय पर सब्जबाग व झूठे वायदों से विश्वास खो चुके थे। उन्होंने बड़े लाटों का वर्षों तक राजभोग कराने का भी वायदा किया था, सब झूठ साबित हुआ।

(ख) बंग-भंग योजना की विफलता व इंग्लैण्ड में एक फौजी अफसर की मनमानी नियुक्ति के प्रयास की विफलता और अंग्रेजी सरकार की कर्जन पर से विश्वास टूटना ऐसे कारण थे, जिससे क्षुब्ध होकर उसे इस्तीफा देना पड़ा जो उसकी विवशता थी, क्योंकि स्थितियाँ विपरीत हो गयी थी।

(ग) गरम राख अपनी प्रकृति के अनुसार सान्निध्य में आने वाली हर चीज को अस्तित्वहीन बनाके (राख) में परिणित कर देती है। कर्जन ने विपरीत परिस्थितियों में अपने को जमाना चाहता जो गरम राख के समान थी। ऐसे में उसका उखड़ना व असफल होना निश्चित ही था।

अथवा

(क) लेखक के अनुसार लाहुल-स्पीति के लोग वर्षा के सुख से अनजान हैं। स्पीति में बारिश न के बराबर होती है। भीषण ठंड के कारण वर्षा भी बर्फीली होती है। अतः जब लोग कालिदास के मोहक पावस प्रसंग को पढ़ेंगे तो वे इसे नहीं मानेंगे, न ही समझ सकेंगे।

(ख) कालिदास ने वर्षा ऋतु का मादक एवं मनमोहक वर्णन किया है। उन्होंने वर्षा में बादलों के बरसने का, नदियों के बहने का, मस्त हाथियों के चिंघाड़ने का, जंगल में फैली हरियाली का वियोगिनी नारियों के रोने-कलपने का, मोरों के नाचने का तथा बंदरों के चुप्पी मारकर गुफाओं में छिपने का वर्णन किया है।

(ग) स्पीतिवासी वर्षा ऋतु के अनुभव को नहीं समझ पाते। वर्षा का सुख उनकी अनुभूतियों का अंग नहीं है, वे पावस प्रसंग से पूर्णतः अनभिज्ञ हैं। वहाँ वर्षा का अभाव ही नियति है।

11. (क) मियाँ नसीरुद्दीन का शब्द चित्र—'हमने जो अन्दर झाँका तो पाया, मियाँ चारपाई पर बैठे बीड़ी का मजा ले रहे हैं। मौसमों की मार से पका चेहरा, आँखों में काइयाँ भोलापन और पेशानी पर मैंने हुए कारीगर के तेवर।'।

(ख) कोई भी फिल्मी दृश्य हमें तभी प्रभावित करता है जबकि वह अखण्ड हो। उसके अगले और बाद वाले अंश में एक निरन्तरता हो। इसी से दृश्य स्वाभाविक बना रहता है और विश्वसनीय बनता है अन्यथा दर्शक भंग की मनःस्थिति में फँस जाता है और वह नकली प्रतीत होने लगता है।

(ग) मुम्बई में रहकर कला के अध्ययन के लिए राजा ने पहले एक्सप्रेस ब्लॉक स्टूडियो में डिजाइनर की नौकरी की। इन दिनों उसे सुबह दस बजे से छः बजे तक काम करना पड़ता था। उसके बाद उसे मोहन आर्ट क्लब में अध्ययन करने जाना पड़ता था। उन दिनों वह रात में एक परिचित ड्राइवर के कमरे में सोया करता था। बाद में स्टूडियो में ही कला विभाग का काम मिल गया, तब उसे फर्श पर सोना पड़ा। वह रात को ग्यारह-बारह बजे तक चित्र और रेखाचित्र बनाया करता था। इसी कठिन परिश्रम के कारण उसे मुम्बई आर्ट्स सोसायटी का स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ।

(घ) जब हम कोई सृजन करते हैं और उसके माध्यम से जनसाधारण को प्रभावित करने में समर्थ होते हैं तो हमें लगता है कि हम चाहें तो बड़े से बड़ा कार्य कर सकते हैं। उस समय हमारे मनोबल की शक्ति हमारे विश्वास, उमंग, सकारात्मक अग्रगामी सोच को दृढ़ बना देती है।

12. बेबी (लेखिका) की जिन्दगी में बहुतों का प्यार-करम आता होता तो निश्चय ही उसका जीवन नारकीय होता। उसे पेट भर खाना नहीं मिलता। बच्चे पढ़ने के स्थान पर बाल मजदूर बन जाते। बच्चे भीख माँगते या झूठन के लिए गिडगिड़ा रहे होते। लेखिका को सम्मान मिला और जेठू, आनन्द बाबू और शर्मिला दी का प्यार भी तातुश के कारण ही प्राप्त हुआ। उसके बाबा भी उससे मिलने आए।

13. (i) राजस्थान के लोग जानते हैं कि भूमि के अन्दर मौजूद नमी को ही कुँई के द्वारा पानी के रूप में प्राप्त किया जाता है। क्षेत्र में जितनी ज्यादा कुँई होगी, भीतरी नमी का उतना ही अधिक प्रयोग होगा।

अगर नई कुँई का निर्माण होगा तो सहज ही दूसरी कुँइयों पर नमी का बँटवारा होगा। कुँई की पानी एकत्रित करने की क्षमता पर असर पड़ेगा। इसीलिए ग्राम समाज में निजी कुँई बनाने के लिए मुश्किल से अनुमति मिलती है। निजी होते हुए भी कुँइयाँ सार्वजनिक सम्पत्ति बन जाती है और उन पर ग्राम समाज का अंकुश लगा रहता है।

(ii) संगीत में बहुत संभावनाएँ छिपी हुई हैं। इसके विस्तृत क्षेत्र में बहुत सी धुनें, बहुत से राग और स्वर अनछुए रह गये हैं। बहुत से सुधार-संस्कार होने अभी शेष हैं। अभी वर्तमान फिल्मी संगीत में नित नये प्रयोग किए जा रहे हैं। नई धुनें, नए प्रयोग, नए स्वर, नई शैली जनता के समक्ष पेश किए जाने का प्रयास किया जा रहा है।

